प्रतिवेदन

कार्यक्रम – छात्रों एवं शिक्षकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

विषय – हिन्दी महाकाव्य और उपन्यास : लेखन शैली एवं सम्भावनाएँ

आयोजन – हिन्दी विभाग एवं आई क्यू ए सी

दिनांक – 12 जून 2021

मोड– ऑनलाईन

शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया छत्तीसगढ़ भारत के हिन्दी विभाग में डॉ0 रमेश टण्डन विभागाध्यक्ष हिन्दी के मुख्य संयोजन में दिनांक 12 जून 2021 को ''हिन्दी महाकाव्य और उपन्यास : लेखन शैली एवं सम्भावनाएँ'' विषय पर एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन हुआ। निधि पटेल के द्वारा सुमधुर कंठ से राज्य गीत प्रस्तुति उपरान्त प्राचार्य डॉ0 पी सी घृतलहरे ने समस्त अतिथियों, वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि माननीय उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल जी ने संयोजक से संगोष्ठी के दौरान दूरभाष वार्ता करते हुए संगोष्ठी की सफलता की कामना की एवं आयोजन मण्डल को शुभकामनाएँ प्रेषित की। डॉ0 मीनकेतन प्रधान रायगढ़ के सारगर्भित बीज वक्तव्य के पश्चात्, विशिष्ट अतिथि मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अन्तर्गत केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के पूर्व निदेशक सम्मानीय कुलपति पण्डित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर प्रो0 डॉ0 के एल वर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि महाकाव्य और उपन्यास लेखन शैली में वैदिक साहित्य, जैन साहित्य, छायावाद के आधार स्तम्भ कवि जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी, उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद विरचित गोदान उपन्यास के आधार पर वर्तमान समय में लेखन शैली के लिए गम्भीर अध्ययन के साथ चिंतन और मनन होना चाहिए। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर

रहे कवि, अर्थशास्त्री, राष्ट्रवादी विचारक संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की भाषा विशेषज्ञ समिति के सदस्य सम्मानीय कुलपति अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर आचार्य डॉ0 ए डी एन वाजपेयी ने महाकाव्य के अन्तर्गत तुलसी कृत रामचरितमानस के राम और बाल्मीकि कृत रामायण के राम का तुलनात्मक विश्लेषण किया और तुलसी के राम को जनमानस का राम स्थापित किया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' संस्थापक अध्यक्ष भारत नार्वेजियन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम ओस्लो नार्वे ने उपन्यास आदि लेखन के पूर्व साहित्य का अध्ययन, चिंतन, मनन और स्रोतों की भली–भांति जाँच को अनिवार्य बताया। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के संकायाध्यक्ष विषय विशेषज्ञ डॉ0 शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने अपने विद्वता पूर्ण शोधपरक अध्ययन के आधार पर सम्बोधित करते हुए कहा कि संस्कृत ग्रंथ, पद्मावत, रामचरितमानस, रघुवंशम् आदि महाकाव्य के आधार पर हिन्दी महाकाव्य रचे जा सकेंगे। महाकाव्य के उदात्त मुख्य चरित्र के चयन को रेखांकित करते हुए महाकाव्य के प्रमुख तत्वों के प्रत्येक क्षेत्र को भी डॉ0 शर्मा ने उजागर किया। गुरु घासीदास शोध पीठ पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, 45 देशों के अकादमिक यात्री, 40 किताबों के प्रणेता डॉ0 जे आर सोनी ने उपन्यास लेखन शैली को विभिन्न तत्वों के आधार पर स्पष्ट किया।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के समन्वयक मनोज साहू के तकनीकी सहयोग से सम्पन्न इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रांतों के प्राचार्य, प्राध्यापक, शोधार्थी, हिन्दी के छात्र, हिन्दी के पाठक, हिन्दी के कवि–लेखक सहित शताधिक हिन्दी सेवी की गरिमामयी ऑनलाईन उपस्थति रही। महाविद्यालय से विभागीय प्राध्यापक जयराम कुर्रे, दिनेश संजय सहित अनेक प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा एम ए हिन्दी के छात्रों की भी उपस्थिति रही। डॉ0 आर के टण्डन के ऑनलाईन बेहतरीन मंच संचालन और विभागीय अतिथि प्राध्यापक डॉ0 आकांक्षा मिश्रा के आभार वक्तव्य के साथ संगोष्ठी, अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल रही।